

श्री योग वासिष्ठ महारामायण

यतः सर्वाणि भूतानि प्रतिभान्ति स्थितानि च ।

यत्रैवोपशमं यान्ति तस्मै सत्यात्मने नमः ॥

ज्ञाता ज्ञानं तथा ज्ञेयं द्रष्टा दर्शनदृश्यभूः ।

कर्ता हेतुः क्रिया यस्मात् तस्मै ज्ञप्त्यात्मने नमः ॥

स्फुरन्ति सीकरा यस्मादानन्दस्याम्बरेऽवनौ ।

सर्वेषां जीवनं तस्मै ब्रह्मानन्दात्मने नमः ॥

सृष्टीके आरम्भमें सम्पूर्ण भूत जिनसे प्रकट होकर प्रतीतिके विषय होते हैं, स्थितिकालमें जिनमें ही स्थित होते हैं और प्रलयकाल आनेपर जिनमें ही लीन हो जाते हैं, उन सत्यस्वरूप परमात्माको नमस्कार है ।

ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय; द्रष्टा दर्शन और दृश्य तथा कर्ता, कारण और क्रिया - इन सबका जिनसेही आविर्भाव होता है, उन ज्ञाता आदि के साक्षी और परमार्थतः ज्ञानरूप से अवस्थित प्रत्यगात्मा को नमस्कार है ।

जिनसे स्वर्ग और भूतल आदि सभी लोकोंमें आनन्दरूपी जलके कण स्फुरित होते हैं - प्राणियोंके अनुभवमें आते हैं तथा जो समस्त जीवोंके जीवनाधार हैं, उन आनन्दके महासागररूप परब्रह्म परमात्माको नमस्कार हैं ।

मोक्षका साधन क्या है - कर्म या ज्ञान ?

पूर्वकालमें सुतीक्ष्ण नामसे प्रसिद्ध कोई ब्राह्मण थे, जिनके मनमें संशय छा गया था; अतः उन्होंने महर्षि अगस्तिके आश्रममें जाकर उन महामुनिसे आदरपूर्वक पूछा - 'भगवन्! आप धर्मके तत्त्वको जानते हैं । आपको सम्पूर्ण शास्त्रोंके सिद्धान्तका सुनिश्चित ज्ञान है । मेरे हृदयमें एक महान् संदेह है, आप कृपापूर्वक इसका समाधान कीजिये । मोक्षका साधन कर्म है या ज्ञान है अथवा दोनों ही हैं? इन तीनों पक्षोंमेंसे किसी एकका निश्चय करके जो वास्तवमें मोक्षका कारण हो, उसका प्रतिपादन कीजिये ।'

अगस्त्य मुनि ने कहा: जैसे आकाशमें दोनों ही पंखों से पक्षी उड़ते हैं, एकसे नहीं, वैसे ही ज्ञान और कर्म दोनों से 'तद्विष्णोः परमं पदम्' इत्यादि श्रुति से जिस परमपद रूप कैवल्य का वर्णन किया गया है, उसको अधिकारी लोग अपने आत्मामें ही प्राप्त कर लेते हैं, अतः ज्ञान और कर्म दोनों मोक्षके कारण हैं । केवल कर्मों से या केवल ज्ञान से मोक्ष नहीं होता किंतु ज्ञान और कर्म दोनों से मोक्ष होता है । अतः ब्रह्मज्ञ बड़े बड़े मुनि कर्म और ज्ञान दोनोंको मोक्षके साधन मानते हैं । इसलिये अनुभव सिद्ध विषय में किसी प्रकार का संदेह नहीं करना चाहिये ।

दिवि भूमौ तथाऽऽकाशे बहिरन्तश्चमे विभुः ।

यो विभात्यवभासात्मा तस्मै सर्वात्मने नमः ॥

जो स्वर्गमें, भूमि में, आकाश में, हमारे अन्दर और बाहर निरन्तर विराजमान है, अर्थात् जिसकी सत्ता और प्रकाशसे

यह सम्पूर्ण प्रपंच सत्तावान और प्रकाशित होता है, उन सर्वात्मा और सर्वावभासक परब्रह्म परमात्माको नमस्कार हैं ।

इस शास्त्रका का अध्ययन करनेमें अधिकारी कौन ?

' मैं इस संसार रूप कारागार में बद्ध हूँ, इससे मुझे मुक्त होना चाहिये ' - ऐसी जिसको मुक्ति की प्रबल इच्छा हुई है एवं जो अत्यन्त अज्ञानी नहीं है और जो अत्यन्त ज्ञानी भी नहीं है वही इस शास्त्र के श्रवण में अधिकारी है । निष्कर्ष यह है की अनेक पुण्योंसे जोसके राग आदि दोष क्षीण होगये हैं और विवेक से जिसे आत्मा की जिज्ञासा हुई है, ऐसे विशेषरूप से आत्मा को न जाननेवाले अज्ञानी का ही इस शास्त्रमें अधिकार है ।

इस शास्त्रका का परिचय और प्रयोजन

पहले जिसमें कथारूप उपाय है उस रामचरितवर्णनात्मक पूर्वरामायण का विचार कर जो मोक्षके उपायभूत इन छः प्रकरणों का विचार करता है, वह बुद्धिमान् इस संसार में पुनः जन्म आदि दुःख को प्राप्त नहीं होता ।

पूर्वरामायण में जिस मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचंद्रजी की कथा का वर्णन किया गया है, वह कथा ही ज्ञानाधिकार को प्राप्त करानेवाले धर्म-तत्त्वज्ञान, धर्म का अनुष्ठान और ईश्वर में विस्वास के उपाय हेतु है । अर्थात् सारी रामायण की कथा सुनने कि बाद मनुष्य को धर्म का यथार्थ ज्ञान कोता है, फिर वह उसका अनुष्ठान करता है और अनुष्ठान से निर्मल चित्त होने पर ईश्वर में उसे विश्वास होता है, इन तीनों के होनेपर वह ब्रह्मज्ञानका अधिकारी होता है । अतः जिससे भगवान की कथा का सविस्तर वर्णन किया गया है, उस पूर्वरामायण का पहले खूब अभ्यास और परिशीलन करने के बाद जो पुरुष इस योगवासिष्ठमें मोक्षके लिये बतलाये गये छः प्रकरणोंका विचार करेगा उसका फिर इस अनेकविध दुःखोंसे भरे हुए संसार में आगमन नहीं होगा अर्थात् वह मुक्त हो जायगा ।

मोक्षका स्वरूप

जैसे भ्रमवश रूपरहित आकाश में नीले पीले आदि रंगोंका भान होता है वैसे ही अज्ञानवश निर्गुण निराकार ब्रह्म में जगत् का भ्रम होता है । इसलिये प्रमाण और अनुभव से मैंने निश्चय किया है की निरूप आकाश में नीले पीले आदि रंगों की भाँति ब्रह्म में कल्पित अत्यन्त असम्भावित जगत् का समूल अविध्या और उसके संस्कार के नाश द्वारा जैसे फिर स्मरण ही न हो उस प्रकार विस्मरण होना ही सबसे उत्कृष्ट मुक्ति का लक्षण और स्वरूप है । ' इस दृश्य प्रपंच का अत्यन्त अभाव है, यह बिना हुये ही हो रहा है ' - जबतक ऐसा बोध नहीं होता तबतक कोई कभी भी उस उत्कृष्ट आत्मज्ञान का अनुभव नहीं कर सकता; इसलिये आत्मज्ञान का अन्वेषण — उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये । सम्पूर्ण जगत् के अधिष्ठान प्रत्यगभिन्न आत्मतत्त्वके साक्षात् से ही दृश्य का अत्यन्त बाध हो सकता है ।

यह जगतरूपी भ्रम यध्यपि प्रत्यक्ष दिखाई देता है तो भी इस शास्त्रके विचार से अनायास ही ऐसा अनुभव हो जाता है की ' यह है ही नहीं ' - ठीक उसी तरह जैसे आकाश में नील आदि वर्ण प्रत्यक्ष दीखने पर भी विचार करने से बिना परिश्रम के ही यह समझमें आजाता है की इसका अस्तित्व नहीं है । यह दृश्य जगत् वास्तव में है ही नहीं ऐसा बोध होने पर जब मनसे दृश्य प्रपंच का मार्जन (निवारण या अभाव) हो जाय, तब परमनिर्वाणरूप शान्ती का स्वतः अनुभव होने लगता है ।

सम्पूर्ण रूप से वासनाओंका जो परित्याग (अत्यन्त अभाव) है वही उत्तम मोक्ष कहलाता है । उसे अविध्या रूपी

मलसे रहित ज्ञानी ही प्राप्त कर सकते हैं। जैसे शीत के नष्ट होने पर हिमकण तुलन्त गल जाते हैं वैसे ही वासनाओंके नष्ट होजाने पर वासनापुंज चित्त शीघ्र ही गल जाता है (उसका अभाव हो जाता है)।

द्विविध वासना का स्वरूप

वासना दो प्रकार की कही गयी है - शुद्ध और मलिन। मलिन वासना जन्मकी हेतुभूत है, उसके द्वारा जीव जन्म मरण के चक्कर में पड़ता है और शुद्ध वासना जन्मका नाश करने वाली, मोक्षका साधन है।

मलिन वासना का लक्षण: विद्वानोंने मलिन वासना को पुनर्जन्मकी प्राप्ति करनेवाली बताया है। अज्ञान ही उसकी घनीभूत आकृति है तथा वह बड़े हुए अहंकार से सुशोभित होती है। वादना बीजोंके अंकुरित होने में अज्ञान ही सुक्षेत्र है। अज्ञान रूपी सुक्षेत्र में जिसका कलेवर खूब विशाल हुआ है अर्थात् विशयोंके अभ्याससे खूब बढ़ी हुई, राग-द्वेष आदि से वृद्धि को प्राप्त होने के कारण घन अहंकार रूप क्षेत्र के स्वामी द्वारा भली भाँती पाली-पोषी गई अतएव शोभित इसी पुनर्जन्मकारिणी वासना को पंडित लोगोंने मलिन कहा है।

शुद्ध वासना का लक्षण: जो भूने हुए बीज के समान पुनर्जन्मरूपी अंकुर को उत्पन्न करने की शक्ति को त्यागकर केवल शरीरधारण मात्र के लिये स्थित रहती है वह वासना 'शुद्धा' कही गयी है। पुनर्जन्म का निवारण करने वाली शुद्ध वासना जीवनमुक्त पुरुषोंके शरीर में, चक्र में भ्रमण के समान मृत संस्कार रूप से रहती है। जो लोग शुद्ध वासना से युक्त हैं वे ही ज्ञातज्ञेय (जिन्होंने ज्ञातव्य पदार्थ - ब्रह्म को जान लिया है) होते हैं। ज्ञातज्ञेय होकर वे फिर जन्मरूप अनर्थ के भाजन नहीं होते। वे ही वास्तव में बुद्धिमान कहे जाते हैं। जानने योग्य परमात्मा के तत्त्व को जानने वाले वे परम बुद्धिमान पुरुष 'जीवनमुक्त' कहलाते हैं।